#३०: सत्यता-६ : न्याय ही धर्म है

दिनांक -८/१२/२०११

न्याय ही धर्म है | धर्म का परिभाषा ही है, जिससे जिसका विलगीकरण न हो | विकल्प विधि से पता चला कि पदार्थ अवस्था में अस्तित्व धर्म अविभाज्यहै | पदार्थ भले ही कितना भी ह्रास या विकास हो, अस्तित्व धर्म यथावत बना रहता है | अस्तित्व धर्म का मतलब होने के रूप में विद्यमानता से है | प्राणावस्था अथवा अन्न, वनस्पतियां, जंगल, झाड़ी ये सभी अस्तित्व सहित पुष्टिधर्मा है | जीवावस्था में देखा गया है कि जीवन और शरीर के रूप में जीते हुए जीने की आशा के रूप में क्रियाशील रहते हैं | यह अस्तित्व, पुष्टि सहित जीने की आशा के रूप में धर्म पाया गया है | जबकि ज्ञानावस्था का मानव अस्तित्व, पुष्टि, जीने की आशा सहित सुखपूर्वक जीने के लिये क्रियाशील रहना पाया गया है | मानव, जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में रहता है | शरीर को ही जीवन माने रहता है, इसलिए विकसित होने का प्रमाण नहीं हो पाता | विकसित चेतना में ही मानव का प्रमाण है |

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद का प्रणेता स्वयं ही एक मानव है | प्रणेता, मानव परम्परा का कट्टरपंथी परिवार का एक सन्तान है | ऐसे सन्तान होते हुए हम सार्वभौम परम सत्य का अनुभव कर चुके हैं | इसके आधार पर सोचने पर यही निकलता है कि हर व्यक्ति अपने में एक कट्टर पंथ ही है | हर व्यक्ति अपने को श्रेष्ठ माने ही रहता है | यह अनुभव किया गया है कि विकसित चेतना में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना ही श्रेष्ठता का आधार, प्रमाण है न कि रूप, पद, धन, बल | मानव का वर्तमान इतिहास को देखने पर पतालगता है कि इन्हीं चार बातों में से किसी एक अथवा सभी को श्रेष्ठ मानते हुए चले हैं | इसी में संतुलन, समानता का अभाव हो गया है जबकि नर-नारी में समानता का बिंदु अध्ययनगम्य होना आवश्यक है | इसी प्रकार गरीबी-अमीरी में संतुलन का अध्ययन भी आवश्यक है | यह मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में ही अध्ययनगम्य है | विकसित चेतना विधि से मानव, मानवत्व के साथ जी पाना सहज होता है | इसी में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता है | इसी विधि से मानव सुखी होने का अपेक्षा पूरा हो जाता है |

जो जिसके पास रहता है वह उसको आवंटित करता ही है | मनुष्य के पास होने के रूप में सुख या दुःख ही होता है | सुख समाधान, समृद्धि पर आधारित रहता है | समस्या या दुःख शिकायत के आधार पर होता है | इसे भली प्रकार अध्ययन कराने के लिये विकसित चेतना को प्रस्तुत किया गया है | अभी तक मानव विकसित हुआ नहीं, विकास का रास्ता बना नहीं | यह अध्ययन विधि से ही संभव है | अध्ययन को छोड़कर यह संभव नहीं है | अध्ययन के लिए सम्पूर्ण वाङ्मय मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद बनाम अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के रूप में प्रस्तुत है | इसी के आधार पर क्रम से शासत्राध्ययन अर्थात श्रवण, मनन, अवधारणा अर्थात अर्थ बोध होना ही एक मात्र रास्ता है | दूसरा रास्ता अनुसन्धान विधि है | तीसरा कोई विधि अस्तित्व में नहीं है |

विकसित चेतना पूर्वक विकास का फल परिणाम मिल पाता है, जीव चेतना से नहीं मिलता | अभी तक मानव जीव चेतना में जिया है | यह मानव के पुण्य से अपेक्षा के अनुसार विकसित चेतना विधि से अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन पर

आधारित, मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के रूप में प्रस्तुत हो चुका है जिसमें दर्शन, वाद, शास्त्र समाया है | इसका अध्ययन केंद्र भी कई जगह बन चुका है | पहला केंद्र अछोटी, रायपुर(छ.ग.) में है | उद्गम स्थली अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म.प्र.), में है | अभी अन्य स्थान जैसे कानपुर में विधिवत अध्ययन के लिए प्रयत्न जारी है, होना शेष है | मानव तीर्थ प्रस्तावना में है | इन सभी बातों से पता चलता है कि से अपेक्षित ज्ञान मानव के सम्मुख प्रस्तुत हो चुका है | जिसका परीक्षण करने का अधिकार सर्वमानव में है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत